# जले हजारो दीप

जले हजारो दीप दीप में तेल जले बाती।
पले हजारो बीच-बीच में याद नहीं आती॥
जब भी देखे जलते दिखते द्वेष कहाँ से जाये।
फिरभी तो उजले दिखते चैन कहाँ से आये॥
गये हजारों साल साल में चाह नहीं जाती॥१॥

पल हजारो.....

बढती जाये बढती रहती रात दिवससी दूरी।
कहते जाये कहते रहते आश हुयी ना पूरी॥
कटे किनारे आज राज ही, राह नहीं भाती॥२॥

जले हजारो .....

मन की देखो सबमें रहता, डाह जरा ना जाये।
पत्र बुलबुला सा रहते जग में, होश जरा ना आये॥
रही उसी की आह आह ही, काह नहीं जाती॥३॥

पले हजारो.....

बक वन उन्नमुख मीनसा चिटके, जोर जोर सा रोये।
उजले उद्भवगदले बनके, भोर ढोर सा सोये॥
जले बहारे देख देखकर, चिन्ता तन तन खाती॥४॥

जले हजारो.....

कर्मो के फल भाग्य कहायें, जान जान ना देवे।
आपा तज मानवता गहलें, चाह न हिय में लेवे॥
तम हट जाये रहे लेशना, तेल दीप विन बाती॥५॥

पले हजारो.....

खुद ही जाने भान होय जब होश रहे ना गोयें।
अविनाशी हो दीप बनेना, बीज रीझ नाबोये॥
भूमें बचेगी चाम चाम से रूह चली जाती॥६॥

पले हजारो.....

डा० देवीदीन अविनाशी'